International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 245-248

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 245-248
www.allresearchjournal.com
Received: 09-04-2015
Accepted: 12-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

संवेदना की अवधारणा और उसके प्रकार

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

संवेदना से अभिप्राय

संवेदना मस्तिष्क की सामान्य एवं सरलतम प्रक्रिया है। मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों जैसे आँख, नाक, कान, इत्यादि के माध्यम से भौतिक जगत का ज्ञान प्राप्त करता है। मानव मस्तिष्क से संवेदना का चिर संबंध है। मस्तिष्क ही मनुष्य को अच्छे–बुरे की पहचान करवाता है क्योंकि मस्तिष्क विवके युक्त होता है। जब कोई भौतिक जगत की वस्तु किसी ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करती है तो चेतन हो जाती है, इसी प्रक्रिया को संवेदना कहा जाता है।

इस लौकिक जीवन में मनुष्य सुखात्मक और दुखात्मक दोनों प्रकार की अनुभूतियों को अनुभव करता है। अतः यही अनुभव संवेदना कहलाता है।

अंग्रेजी में संवेदना को "सिंपैथी" अथवा "फैलो–फीलिंग" तथा मनोविज्ञान में "सैंसेशन" कहते हैं। जैसे हम किसी मधुर संगीत को सुनकर रोमांचित हो उठते हैं तो यही रोमांच एक प्रकार की संवेदना है।

संवेदना के विविध परिप्रेक्ष्य

संवेदना का व्युत्पत्यात्मक अर्थ

मूलतः संवेदना का संबंध मानव के मन से होता है। किसी वस्तु को देखकर मन में जो तरह–तरह के भाव उत्पन्न होते हैं, वही संवेदना है। यह मन के अंदर से भी उत्पन्न होती है और बाहर से भी। भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में संवेदनाएँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं।

संवेदना शब्द मूल संस्कृत शब्द "संवेद" से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ सुख–दुख का अनुभव, ज्ञान, बोध, प्रतीति इत्यादि है। संवेदन पुल्लिंग शब्द है जिसमें "आ" प्रत्यय जोड़ने से संवेदना स्त्रीलिंग शब्द बना है।

"वृहद् हिंदी कोश" में संवेदना का अर्थ इस प्रकार दिया गया हैः–

"संवेदन" (पुल्लिंग) संवेदना (स्त्रीलिंग) ज्ञान, अनुभूति जताना, सूचित करना, प्रकट करना इत्यादि।"[1] संवेदनाओं के आधार पर मन में बाह्य जगत के प्रत्यय बनते हैं। इन प्रत्ययों से हमारा ज्ञान बढता है। संवेदनाओं का संबंध इंद्रियों से है। और इंद्रियाँ हमारे भावजगत को अधिक प्रभावित करती हैं। अतः हम सुखप्रद संवेदनाओं को चाहने लगते हैं और दुखद संवेदनाओं से बचने का प्रयास करते हैं। "संवेदनाओं से प्रत्यय बनते हैं। अतः संवेदनाओं की उपेक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि इनके सहयोग से ही हम अपना विश्लेषण ठीक–ठाक कर सकने में समर्थ हो सकते हैं।"[2] एक नवजात बच्चे का संबंध भौतिक जगत से नहीं होता। अतः उसकी संवेदनाएँ विशुद्ध होती हैं। जबकि प्रौढों की संवेदनाएँ विशुद्ध न होकर संश्लिष्ट बन जाती हैं क्योंकि उनके शरीर का पूर्ण विकास हो गया होता है। संवेदना को साधारण तथा सहानुभूति के अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा है, परन्तु मनोविज्ञान में इसका अर्थ ज्ञान और ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव से लिया जाता है।

संवेदना का शाब्दिक अर्थ

आदित्य नारायण तिवारी जी "शिक्षा मनोविज्ञान (भाग–1) में संवेदना को परिभाषित करते हुए लिखते हैं" :–

"संवेदना वह मानसिक प्रक्रिया है, जिससे हमें किसी उतेजना के गुण मात्र की चेतना होती है।"[3] मानव मस्तिष्क में संवेदना अधिकतर दुःखित अवस्था में ही अनुभव होती है। मानव हृदय में भाव उत्पन्न होकर संवेदना का रुप धारण करते हैं, लेकिन भावुकता क्षण भर के लिए होती है, जबकि संवेदना स्थायी होती है।

साहित्य के माध्यम से ही संवेदना को अभिव्यक्ति मिलती है, साहित्य समाज की अभिव्यक्ति होता है क्योंकि समाज में चाहे कैसी भी घटनाएँ हो रहीं हों या हुई हों, उनका प्रतिबिम्ब हम साहित्य में देख

सकते हैं। साहित्यकार का व्यक्तित्व सबसे महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि उसमें संवेदनाओं को ग्रहण करने की शक्ति होती है। व्यक्ति, समाज या वर्ग में जो कुछ भी घटित होता है, साहित्यकार की संवेदना उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया करती है। यही संवेदना वाणी का रुप धारण कर साहित्य का रुप प्राप्त कर लेती है।

संवेदना का संबंध काव्य के आंतरिक स्वरुप से होता है, जिसे काव्य का भाव–पक्ष या अनुभूति पक्ष भी कहा जाता है। इसे काव्य की आत्मा भी माना जाता है।

संवेदना के संबंध में आनंद प्रकाश दीक्षित लिखते हैं, "कलाकार अपने परिवेश के सम्पर्क में आता है, परिवेश की कोई वस्तु, किसी प्रकार की संवेदना कलाकार में निर्माण करती है, इस संवेदना की प्रतिक्रिया के लिए या प्रत्युदगार की यह अधीरता, यह आकुलता उसे प्रकाशन पर, अभिव्यंजना पर, अभिव्यक्ति पर विवश करती है। इस विवशता का परिणाम कला–कृति के रुप में प्राप्त होता है। संवेदना का आलंबन संसार की कोई वस्तु या घटना या प्रक्रिया होती है।"[4]

संवेदना का पारिभाषिक अर्थ

संवेदना का संबंध मानव मन से है, किसी वस्तु को देखकर मन में जो तरह–तरह के भाव उत्पन्न होते हैं, वही संवेदना है। यह मन के अंदर से भी उत्पन्न होती है और बाहर से भी। भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में संवेदनाएँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं। संवेदना की विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैः–

"मानक हिंदी कोष" में रामचन्द्र वर्मा ने संवेदना के संबंध में लिखा हैः–

"संवेदना" (स्त्री) (सं. संवेदन टाप)

1. मन में होने वाला अनुभव या बोध, अनुभूति।
2. किसी को कष्ट में देखकर होने वाला दुःख किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। सहानुभूति (सिंपेथी)
3. उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की प्रक्रिया या भाव (कंड़ोलेंस)"।[5]

"वैज्ञानिक परिभाषा कोष" में संवेदना की परिभाषा इस प्रकार दी हैः– "संवेदना – मनोविज्ञान, कला, साहित्य, शास्त्र आदि में इंद्रियों का ऐसा व्यापार जिसकी अनुभूति तो होती है, परन्तु जिसकी अभिव्यक्ति नहीं हो पाती"।[6]

भोलानाथ तिवारी और महेन्द्र चतुर्वेदी के अनुसार,

"संवेदना अंग्रेजी के सैंसिटिबिटी, सेंसेशन, सेंसिबिल्टी, फिलिंग का समानार्थी शब्द है।"[7]

तपेश चतुर्वेदी के अनुसार,

"आज साहित्य जगत में संवेदना का अर्थ विस्तार हो गया है। परिणामस्वरुप साहित्य में इसका प्रयोग बढा है। यदि विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखें तो ज्ञात होता है कि संवेदना उस काल्पनिक अनुभव की व्याख्या का प्रयास है जिसमें सहज एवं सात्विक रुप से किसी पदार्थ में आत्मस्वरुप का प्रक्षेपण हो। संवेदना की प्रक्रिया में कवि देखे गए पदार्थ तथा उसकी स्थितियों, गतियों आदि को पूर्णतः आत्मसात् करता है। इसीलिए संवेदना वह अनुभूति है जो कवियों द्वारा अपने व्यक्तित्व तथा अपनी भावनाओं को बाह्य जड़ चेतन पदार्थों के प्रतिकल्पना के माध्यम से प्रक्षेपण द्वारा तादातम्य की स्थिति में उत्पन्न होती है।"[8]

धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार,

"मूलतः वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव है। इसके अनुसार संवेदना उतेजना के संबंध में देह रचना की सर्वप्रथम सचेतन प्रतिक्रिया जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है। संवेदना हमारे मन की चेतना की वह कूटस्थ अवस्था है जिसमें हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है। प्रौढ व्यक्तियों में यह संवेदना प्रायः असंभव हो जाती है यद्यपि साधारणतया अंग्रेजी में इसे "सिम्पैथी" या "फैलोफिलिंग" कह सकते हैं। किन्तु मनोविज्ञान में "सैंसेशन" के रुप में इसका विशिष्ट प्रयोग होता है।"[9]

शेखर शर्मा के अनुसार

"संवेदना कृतिकार और सहृदय पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है। संवेदना समाज, परिवेश, और मनः स्थिति के धरातल पर होने वाले सांझे अनुभवों पर निर्भर करती है।"[10]

धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार,

"संवेदना हमारे मन की वह कूटस्थ अवस्था है जिसमें हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है।"[11]

विभिन्न कोष ग्रन्थों के आधार पर कहा जा सकता है कि संवेदना शरीर की उस शक्ति, गुण अथवा योग्यता को कहा जा सकता है, जिसके आधार पर व्यक्ति को देखने, सुनने, सूंघने, समझने तथा अनुभव करने का ज्ञान होता है। अतः जीवन का व्यापक अनुभव, ज्ञान, या अनुभूति ही संवेदना है।

संवेदना के विभिन्न रुप

संवेदना को अधोलिखित तीन भागों में बाँट सकते हैः–

क) विशिष्ट संवेदना
ख) अंतरावयव संवेदना
ग) स्नायविक संवेदना

"विशिष्ट संवेदना" बाहरी उतेजना से उत्पन्न संवेदना है जिसके माध्यम से विश्व के विभिन्न पदार्थों का ज्ञान होता है। "अंतरावयव संवेदना" आंतरिक अवयवों से संबंधित होती है जबकि "स्नायविक संवेदना" ग्रंथि और मांसपेशियों के संचालन से उत्पन्न होती है।

मनोविज्ञान में संवेदना को आठ भागों में विभक्त किया गया है, जो इस प्रकार से हैः–

1. दृष्टि संवेदना
2. ध्वनि संवेदना
3. प्राण संवेदना
4. स्पर्श संवेदना
5. स्वाद संवेदना
6. मांस पेशीय संवेदना
7. आंतरिक संवेदना
8. संतुलन संवेदना

इन संवेदनाओं को ऐंद्रिय संवेदनाएँ कहा जाता है। यही संवेदनाएँ बाद में अनुभव के द्वारा वैचारिक संवेदनाओं में प्रतिफलित होती हैं। साहित्य में स्नायविक संवेदनाओं की अपेक्षा मनोगत संवेदनाओं का प्रयोग अधिक होता है। भावुक व्यक्ति अधिक संवेदनशील होता है। क्योंकि उसमें जागृत संवेदनाएँ अधिक होती हैं। इस प्रकार संवेदनाओं को हम निम्न भागों में विभाजित कर सकते हैः–

प्रस्तुत शोध में संवेदनाओं को निम्न भागों में बाँटा गया हैः–

संवेदना के प्रकारः– भौतिक संवेदनाः–

1 व्यक्तिगत संवेदना
2 सामाजिक संवेदना
3 राजनीतिक संवेदना
4 आर्थिक संवेदना
5 धार्मिक संवेदना
6 सांस्कृतिक संवेदना
7 साहित्यिक संवेदना

भौतिक संवेदना

सांसारिक विषय वस्तुओं एवं जड चेतन का ज्ञान एवं उनके द्वारा प्राप्त उचित–अनुचित, सुख–दुःख का अनुभव ही भौतिक संवेदना है। इस संवेदना ने ही बाह्य संसार की आकृतियों और उनकी बिंब मात्राओं में गुणात्मक स्वरुप कायम किया है, जिससे हमें संपूर्ण विश्व का भान होता है। भौतिक संवेदना के अंतर्गत निम्नलिखित संवेदनाओं को सम्मिलित किया गया हैः–

1 व्यक्तिगत संवेदना

एक संवेदशील व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तित करने का प्रयत्न करता है, वह व्यक्तिगत स्तर पर किसी बच्चे के सुंदर बाल रुप का वर्णन करके अपनी व्यक्तिगत संवेदना को व्यक्त करता है। कई बार वह किसी बच्चे, युवक–युवती, प्रौढ–प्रौढा को दुःखित अवस्था में देखकर स्वयं दुःख अनुभव करता है। और यदि साधारण व्यक्ति है तो वह वाणी द्वारा ही अपने विचार प्रकट करता है और अगर वह साहित्यकार है तो वह लेखनी द्वारा अभिव्यक्त करेगा, यही व्यक्तिगत संवेदना है।

2. सामाजिक संवेदना

जो संवेदना हमें समाज, समाज की परंपराओं, रुढियों, मान्यताओं से अवगत कराती है, सामाजिक संवेदना कहलाती है। एक व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसका इस समाज के साथ चोली दामन का साथ होता है। समाज के बिना व्यक्ति तथा व्यक्ति के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज में जो भी घटित हो रहा है जैसे जाति–पाति भेदभाव, छुआछूत, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, अन्य समस्याएँ जैसे पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी आदि इन सभी को देखकर व्यक्ति शोकग्रस्त होता है, इनके विरुद्ध आवाज उठाना ही सामाजिक संवेदना है। इसे ही एक समृद्ध साहित्यकार अपनी कलम से समाज, देश, राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत करता है। साहित्यकार इन बुराइयों से निजात पाने के लिए ही समाज को पुनर्गठित और देश की संस्कृति को पुनर्जागृत करने का प्रयास करता है।

3. राजनैतिक संवेदना

लोगों में सामान्य हितों की जानकारी होना, उनकी पूर्ति के लिए राजनैतिक संगठन की आवश्यकता अनुभव करना और उसके निर्माण एवं विकास में प्रयत्न करना ही राजनैतिक संवेदना है। इसमें विभिन्न प्रकार के राजनीतिक मत वादों भिन्न–भिन्न संगठनों के क्रिया–कलापों एवं व्यक्तियों के आपसी संबंधों को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इन संबंधों में नारी का विशेष महत्व है। राजनैतिक संवेदना के कारण ही आधुनिक भारत की नारी इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री पद पर प्रतिष्ठित हुई। अन्य बहुत सी नारियाँ राजनीतिक क्षेत्रों में बढ–चढ कर भाग लेकर अपनी संवेदना का परिचय दे रही हैं। वैसे आज राजनीति पर जातिवाद, धर्म आदि का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। राजनीतिक दल जातिगत आधार पर बन रहे हैं। दल बदल की राजनीति है। पहले जैसे न तो नेता ही रह गए हैं, और न ही उनकी वो नीतियाँ और कार्यक्रम, अब केवल खोखले वायदे होते हैं। बाद में आम जनता को कौन पूछता है। ऐसे हालात को देखकर मन दुःखी नहीं होगा तो और क्या होगा। एक संवेदनशील व्यक्ति ही ऐसे अनुभव कर सकता है और इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठा सकता है।

यही संवेदना साहित्य में अपना स्थान बना लेती है क्योंकि राजनीति का भी साहित्य से गहरा संबंध है। एक संवेदनशील व्यक्ति राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता और राजनैतिक समाज का प्रभाव उसके साहित्य में प्रस्तुत होता है। कोई भी साहित्यकार अपने युग विशेष से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

4 आर्थिक संवेदना

अर्थ (धन) जीवन का महत्वपूर्ण मूल्य और समाज की रीढ की हड्डी है। अर्थ उत्पादन के कारणों, समान वितरण, अर्थाभाव से उत्पन्न स्थितियों, विसंगतियों और समस्याओं का ज्ञान और अनुभूति ही आर्थिक संवेदना कहलाती है। प्राचीन समय में काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष ही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य हुआ करता था परन्तु आधुनिक युग में अर्थ के प्रति मनुष्य का लोभ, मोह बढता चला जा रहा है जिससे सामाजिक संबंध बिखर रहे हैं। पारिवारिक और सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों का विघटन हो रहा है। संयुक्त परिवारों का तो नाम ही रह गया है। पैसे की इस अंधी दौड़ में इन्सान ने हैवान का रुप धारण कर लिया है। उसे अपने समक्ष सभी रिश्ते–नाते खोखले लगते हैं। ऐसे हालात को देखकर अथवा इनके प्रति दुःख अनुभव करना ही आर्थिक संवेदना है। आर्थिक संवेदना द्वारा ही इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

5 धार्मिक संवेदना भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य है और यहाँ रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर किसी न किसी रुप में ईश्वर के दर्शन करता है। भिन्न–भिन्न धर्मों में विश्वास रखने वाले लोग एक–दूसरे का सुख–दुःख में साथ देते है क्योंकि उनमें धार्मिक संवेदना है। आज धर्म के नाम पर अत्याचारों में वृद्धि हो रही है। मानव के हृदय से प्रेम, उदारता, सहानुभूति जैसी भावनाएँ लुप्त होती जा रही हैं, नैतिकता और मानवता मानों बीती बातें हो चुकी हों। इसका कारण यह है कि लोगों में धार्मिक संवेदना नहीं रही है। धर्म मनुष्य के क्रियाकलापों का क्षेत्र विस्तृत कर उन्हें भौतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर सोचने के लिए विवश करता है। इस भावना का विकास धार्मिक संवेदना द्वारा ही संभव है। यह भावना पुरुष, नारी, अमीर, गरीब सभी में एक समान होती है। धर्म द्वारा व्यक्ति को आत्मज्ञान होता है जिससे वह दूसरों को अच्छी तरह समझकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में बढावा देता है।

अतः धर्म ही मानव में सामंजस्य के भाव जागृत कर उसके जीवन को आदर्श बनाता है और ऐसा तभी हो सकता है यदि हम एक–दूसरे के धर्मों की निंदा न करें, सभी धर्मों को एक समान समझें और किसी धर्म विशेष को किसी पर जबरदस्ती न थोपें। धार्मिक संवेदना ने नारी जीवन एवं उसके विचारों और सोच को भी नई दिशा देकर प्राचीन परंपराओं की जगह नई परम्पराएँ स्थापित की हैं। प्रत्येक धर्म को उच्च बनाने, धर्म निरपेक्षता के लिए जो प्रयत्न किया जाता है वही धार्मिक संवेदना है।

6 सांस्कृतिक संवेदना

संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है उत्तम बनाना, संशोधन करना या परिष्कार करना। अंगरेजी में संस्कृति को " कल्चर " कहते हैं जो लेटिन शषा के " कुलवुरा " शब्द से निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ भी पैदा करना या सुधारना है। शाब्दिक दृष्टि से संस्कारों द्वारा जो भाव जीवन में कृति रुप में प्रकट होते हैं, उन्हे संस्कृति कहा जाता है। आदर्श व्यक्तित्व की ओर अभिमुख करने की वृति का नाम ही संस्कृति है।

संस्कृति, व्यक्तिगत अंतःवृति का सामाजिक संस्करण है। इस बात को एक साधारण उदाहरण द्वारा ऐसे समझा जा सकता है कि दूध अपने स्वाभाविक रुप में प्रकृति है। जब उसमें विकार हो जाए, वह फट जाए, प्रयोग के योग्य न रहे, उसे विकृति कहेंगे। दूध का जम कर दहीं रुप में बदल जाना, ओर भी अधिक उपयोगी हो जाना ही संस्कृति है। इन सब बातों का अनुभव, चिंतन अथवा ज्ञान हासिल करना सांस्कृतिक संवेदना है। संस्कृति मानवीय मूल्यों का दर्पण है। इनकी रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है यदि उसके अंदर सांस्कृतिक संवेदना होगी।

सांस्कृतिक संवेदना को बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक मूल्य उपयोगी होते हैं, जो मानवीय अवस्थाओं से जुड़े होते हैं। सांस्कृतिक संवेदना का उन्नत रुप साहित्य ही है। सांस्कृतिक

मूल्य श्रेष्ठ साहित्य के सृजन का आधार बनते हैं और अमर साहित्यिक कृतियाँ हमारी संस्कृति को नया रुप देती हैं। साहित्य संस्कृति को लिपिबद्ध कर उसे स्थायित्व प्रदान करता है। इस तरह एक साहित्यकार संवेदनशील होता है, इसी के कारण ही सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार करता है। साथ में यह आवश्यक भी नहीं है कि साहित्यकार ही संवेदनायुक्त प्राणी होता है। बल्कि एक साधारण व्यक्ति के अंदर भी यह गुण विद्यमान हो सकता है जिसे वह अलग ढंग से अभिव्यक्त करता है।

साहित्य में नारी के प्रति जो पूज्य शव अभिव्यक्त हुए हैं। उसके मूल में हमारे सांस्कृतिक श्व्य रहे हैं। मध्य युग में भारतीय संस्कृति का सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था तथा नारी को भोग्या मानने वाली संस्कृति का प्रभाव बढ गया था। साहित्य में भी यही बात अभिव्यक्त हुई। आधुनिक युग में एक बार फिर नारी के प्रति सम्मान का भाव जागृत हुआ। संस्कृति का लक्ष्य व्यक्ति और समाज के सामने ऐसे आदर्शों, गुणों को रखना होता है जो उनके अनुसार जीवन निर्माण करके व्यक्ति तथा समाज के लिए मंगल साधना कराने में सहायक हो। सांस्कृतिक संवेदना के कारण ही मनुष्य संस्कृति को उच्च एवं आदर्श रुप देने और इसकी रक्षा करने में एकजुट रहता है।

7 साहित्यिक संवेदना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ भावना प्रधान भी है। समाज में रहते हुए उसने सुख–दुःख, हर्ष–शोक, भय–विस्मय, की अनंत अनुभूतियों को समेटना प्रारंभ किया और उनकी अभिव्यक्ति की तड़प भी उसमें पैदा हुई। इसी अभिव्यक्ति में सम्पूर्ण मानवता का रुप झलक उठा। इस तरह साहित्यकार का जन्म हुआ। इसी प्रकार साहित्यकार पहले साधारण मनुष्य होता है। समाज में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जो उसे लिखने पर वाध्य करती हैं। साहित्यकार का संबंध व्यक्ति और समाज दोनों से होता है। साहित्यकार जनसामान्य की अपेक्षा अधिक सहृदय एवं संवेनदशील होता है। वही साहित्य लाभकारी होता है जो संपूर्ण मानवता को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है। समाज में फैली कुरीतियों, बुराइयों को समाप्त करने का जोश भरता है। हमें जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढने के लिए साहित्य की आवश्यकता है। वह साहित्य जो मनुष्य मात्र की मंगल कामना से लिखा गया हो और जीवन के प्रति एक सुप्रतिष्ठित दृष्टि पर आधारित हो। हरदयाल के अनुसार, "जिनकी इन्द्रियाँ सर्वाधिक संवेदनशील हैं वह दूसरे पदार्थों, वनस्पतियों, प्राणियों के संपर्क में निरंतर आता है और इस संपर्क के कारण उसमें अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया अनिवार्यता जागृत होती है।"[12]

हमारी राजनीति, अर्थनीति, नव–निर्माण की योजनाएँ तभी सभी के लिए कल्याणकारी रही होंगीं जब हमारा हृदय उदार और संवेदनशील होगा, बुद्धि सूक्ष्म और सार–ग्राहिणी होगी और संकल्प महान और शुभ होगा। यह कार्य सामान्य साहित्य से पूरा नहीं हो सकता। इसके लिए कविता, कहानी, तथा उपन्यास की रचना करनी होगी। साहित्य केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं होना चाहिए। बल्कि साहित्य को मनुष्य में उच्च आदर्शों की स्थापना, उसकी मंगल कामना और उसमें उन्नत भावों को जागृत करने में सहायक होना पड़ेगा। साहित्य के प्रति इतनी चिंता, उदारता ही साहित्यिक संवेदना है।

संदर्भ सूची

1. कालिका प्रसाद सहाय एवं अन्य – वृहद हिदी कोश पृ 1409
2. राजकमल वोरा –संवेदना और सौदर्य पृ– 52
3. आदित्य नारायण तिवारी, शिक्षा मनोविज्ञान (भाग – 1) पृ. – 556
4. आनंद प्रकाश दीक्षित : आलोचना प्रक्रिया और स्वरुप पृ. 43
5. रामचन्द्र वर्मा : मानक हिन्दी कोष (पाँचवा खंड़) पृ. 237
6. ड़ॉ. वदरीनाथ कपूर : वैज्ञानिक परिभाषा कोष, पृ. 215
7. भोलानाथ तिवारी तथा महेन्द्र चतुर्वेदी, व्यावहारिक हिंदी अंगरेजी शब्दकोष –646
8. तपेश चतुर्वेदी, कविता में संवेदना का स्वरुप – 112
9. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश भाग – 2 पृ. – 863
10. शेखर शर्मा, समकालीन संवेदना और हिंदी नाटक पृ. – 24–25
11. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोष – पृ. – 515
12. हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य –पृ. – 26